सत्यमेव जयते

मराठी मुळाक्षरे

मराठी भाषा प्रवेशिका

MARATHI PRIMER

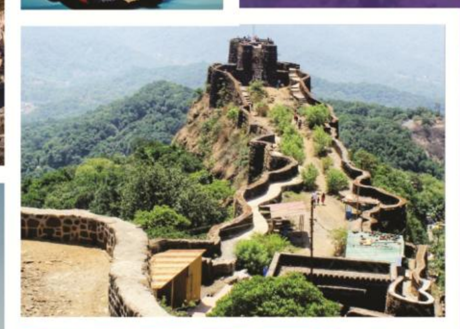

CIIL-NCERT Primer Series

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें
2. क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें
3. स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें
4. लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें
5. उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1. अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें
2. अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी
3. पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें
4. क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें
5. कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें
6. क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

मराठी मुळाक्षरे

मराठी भाषा प्रवेशिका

MARATHI PRIMER

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
Ph: 0821 2515820 (Director)
email: ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
Ph: 011 2696 2580
email: dceta.ncert@nic.in

मराठी मुळाक्षरे
मराठी भाषा प्रवेशिका
MARATHI PRIMER

A basal reader of Marathi alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

Editors
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Ramanujam Meganathan

ISBN: 978-81-971106-1-0

First Edition: December, 2024

Published by CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
All rights reserved. No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

Cover Design: Saravanan A S
Cover Photo: Bhageshree K. Khandale

Printed by CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

Sanjay Kumar, IAS
Secretary

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
Government of India
Ministry of Education
Department of School Education & Literacy

संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

(संजय कुमार)

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001
Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589
E-mail: secy.sel@nic.in

प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

भारत हा युगानेयुगे बहुभाषिक देश राहिला आहे, ज्यात विविध प्रदेशात अनेक भाषा/मातृभाषा बोलल्या जातात. आपल्या दैनंदिन वर्तनात आपण अनेक भाषा वापरतो जे आपल्याला एकत्र बांधतात आणि एकत्र ठेवतात हे देशाचे एक महत्त्वाचे वैशिष्ट्य आहे. भारताचे बहुभाषिक स्वरूप ही एक मोठी संपत्ती आहे, ज्याचा देशाच्या सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक आणि शैक्षणिक विकासासाठी कार्यक्षमतेने वापर करणे आवश्यक आहे, या कल्पनेवर राष्ट्रीय शैक्षणिक धोरण एन.ई.पी. 2020 ने जोरदार भर दिला आहे. विद्यार्थ्यांना त्यांच्या स्वतःच्या भाषांमध्ये अभ्यास करण्याची संधी मिळावी यासाठी शिक्षणातील प्रत्येक स्तरावर बहुभाषावादाला प्रोत्साहन देण्याची शिफारस करण्यात आलेली आहे. सर्व भारतीय भाषांमध्ये अध्यापन-शिक्षण साहित्याच्या निर्मितीमुळे या बहुभाषिक संपत्तीला चालना मिळेल आणि 'विकसित भारत' मध्ये अधिक चांगले योगदान मिळू शकेल. एन.ई.पी. 2020 च्या अनुषंगाने, प्रारंभिक वर्गातील प्रवेशिका विकसित करण्यासाठी एक व्यापक आणि सर्वसमावेशक दृष्टीकोन आवश्यक आहे जो भारताच्या प्रत्येक प्रदेशाच्या अद्विय भाषिक आणि सांस्कृतिक वैशिष्ट्यांशी सुसंगत असेल. या प्रवेशिकांचा उद्दिष्ट केवळ वाचन आणि लिखाणात प्रावीणता प्रदान करणे हे नाही तर सुरुवातीच्या टप्प्यातील विद्यार्थ्यांमध्ये सर्जनशील

आणि गंभीर विचारांना चालना देणे हे देखील आहे. हे एखाद्या भाषेची चिन्हे आणि त्याच्या वर्णानुक्रमातील अक्षरे समजून घेणे, ओळखणे आणि उच्चारणे याची गुरुकिल्ली आहे. हे शब्दांच्या प्रारंभिक, मध्यवर्ती आणि अंतिम स्थानांमधील अक्षरे यासारख्या त्यांच्या संयोगांद्वारे बनवलेल्या या अक्षरांच्या एक किंवा अधिक संचांच्या अर्थाशी देखील मुलांना परिचित करते. याव्यतिरिक्त, हे नंतर नमूद केलेल्या अक्षरांच्या लेखनाचा सराव सुलभ करण्यासाठी उदाहरणे प्रदान करते आणि हे बालगीते/बडबड गीते/गाणी मुलांच्या त्यांच्या भाषेचा विकास, संज्ञानात्मक कौशल्ये आणि स्मरणशक्ती सुधारण्यास देखील उपयुक्त ठरतील.

दिसंबर 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

CIIL-NCERT Primer Series: Marathi Primer Development Team

Guidance

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

Advisors

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru

Coordinators

Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

Editorial Coordinator

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

Resource Persons

Sanjaykumar Karandikar, Professor, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Pratapgunj, Vadodara, Gujarat
Kavita Murumkar, Assistant Professor, Department of Marathi, A.R. Burla Mahila Varishtha Mahavidyalaya, Solapur, Maharashtra
Bhageshree K. Khandale, Junior Resource Person, Linguistic Data Consortium for Indian Languages (LDC-IL), CIIL, Mysuru

Hindi Reviewers

Satyaendra Kumar Awasthi, Senior Resource Person II, LDC-IL, CIIL, Mysuru
Sunetra Sholapurkar, Junior Resource Person, National Translation Mission (NTM), CIIL, Mysuru

Design Team

Nandakumar L, JRP (Technical), NTM, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Eastern Regional Language Centre, (CIIL), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer, anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.

मराठी मुळाक्षरे किंवा मराठी प्रवेशिका कसे शिकवावे !

मराठी भाषा मूळ आर्यांची भाषा आहे. ही प्रामुख्याने भारताच्या पश्चिम भागात म्हणजेच महाराष्ट्र आणि गोवा राज्यात बोलली जाणारी भाषा आहे. तसेच गुजरात, कर्नाटक,मध्य प्रदेश, तामिळनाडू आणि आंध्र प्रदेश यासारख्या शेजारच्या राज्यांमध्ये सुध्दा मराठी बोलली जाते. इतरही अनेक देशांमध्ये मराठी भाषा बोलण्याचे प्रमाण वाढत आहे. मराठी ही भारताच्या बावीस अधिकृत भाषांपैकी एक आहे. आज, मराठी सहजा बालबोध देवनागरी लिपीत लिहिली जाते, यापूर्वी ती मोडी लिपीतही लिहिली जात असे. 2011 च्या जनगणनेनुसार, भारतात मराठी भाषकांची एकूण लोकसंख्या सुमारे 9 कोटी आहे. मराठी मातृभाषा असणाऱ्या लोकांच्या संख्येनुसार मराठी ही जगातील दहावी व भारतातील तिसरी भाषा आहे. मराठी भाषा भारताच्या प्राचीन भाषांपैकी एक असून महाराष्ट्री प्राकृतचे आधुनिक रूप आहे. दरवर्षी 27 फेब्रुवारी रोजी मराठी भाषा गौरव दिन म्हणून साजरा केला जातो.

राष्ट्रीय नवीन शैक्षणिक धोरण 2020 आणि राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडा 2022 अंतर्गत, तीन ते आठ वर्षे वयोगटातील मुलांना त्यांच्या मातृभाषा, घरात बोलली जाणारी भाषा, स्थानिक भाषा आणि प्रादेशिक भाषेत शिक्षण देण्याची व्यवस्था करण्यात आली आहे. मुलांना त्यांच्या मातृभाषेत शिक्षण प्रदान करण्याचे अनेक फायदे आहेत. मराठी ही त्यांची मातृभाषा असल्यामुळे मराठी भाषेतून शिकताना एक सहजपणा मुलांना जाणवतो. मातृभाषेत शिकल्याने व्याक्तिगत सहज फुलते, मुलांमधील उपजत गुणांची चांगली जोपासना होते. त्यामुळे मुलांमध्ये आपल्या मातृभाषेविषयी आपुलकी निर्माण होते. म्हणूनच केंद्र सरकारने बालवाडीतील तीन ते पाच वयोगटातील मुलांना आणि इयत्ता पहिली आणि दुसरीच्या मुलांना प्राथमिक स्तरावर मूलभूत साक्षरता देण्याची व्यवस्था केली आहे. यामध्ये स्थानिक लोकगीते आणि कथांच्या माध्यमातून मुलांची मौखिक भाषा विकसित करण्यावर भर देण्यात आलेला आहे. पुस्तकातील कथा, चित्रे, संवाद यातून हे काम केले जात आहे. यासोबतच मुलांना ध्वनी परिचय, वर्णमाला परिचय, वाचन आणि लेखन सरावासाठी भाषा-शिक्षण पुस्तकाचाही वापर केला जात आहे.

मुलांना त्यांच्या मातृभाषेतून बालवाडी स्तरापासून ते इयत्ता तिसरीपर्यंत शिकवल्यास त्यांच्या बौध्दिक विकासासोबत सर्जनशीलता आणि कल्पनाशक्तीचा विकासात मदत होऊ शकते. मुलांना त्यांच्या मातृभाषेत वाचायला आणि लिहायला शिकण्याबरोबरच हिंदीमध्ये हळूहळू वाचायला आणि लिहायला कसे शिकता येईल याची एक अर्थपूर्ण पध्दत राष्ट्रीय अभ्यासक्रम आराखडा 2022 मध्ये तपशीलवार दिलेली आहे. मुले आधी लिहायला आणि वाचायला शिकतात. मुलांच्या संस्कृती आणि त्यांच्या वातावरणातून शब्दसंग्रह एकत्र करून या पुस्तकात स्थान दिले आहे.

बहुभाषिक शिक्षणाचे मूळ उद्दिष्ट हे आहे की मुलांच्या मातृभाषेतून राज्यभाषेत वाचन आणि लेखन सुरू करणे. वाचन आणि लेखनाची कार्यक्षमता वाढवण्यासाठी हे पुस्तक महाराष्ट्र राज्यातून मराठी आणि हिंदी भाषेत सादर करण्यात आले आहे. मूलभूत साक्षरतेच्या चार प्रमुख पायऱ्या आहेत.

१. पहिल्या टप्प्यात मुलांचा बौध्दिक विकास कथा, कविता आणि चित्रांच्या माध्यमातून केला जातो.

२. भाषा शिकण्यासाठी, मुलांना वस्तूंबरोबरच शब्दांची ओळख करून दिली जाते.

३. शब्दांमध्ये मांडलेली अक्षरे ओळखली जाते. या क्रमाने मुले वेगवेगळ्या अक्षरांचा अर्थ समजतात.

४. अर्थाव्दारे, मुले ध्वनी आणि अक्षरांमधील संबंध समजतात.

भाषा शिक्षण प्रवेशिका कसे शिकवावे याचे मूलभूत मुद्दे खाली दिलेले आहेत.

१. **ध्वनीची ओळख**: चित्र पाहून मुले वस्तूचे नाव सांगतील. शिक्षक मुंलाना विचारतील, चित्राचे नाव कोणत्या ध्वनीने सुरू होते? उदाहरणार्थ, 'अननस' हे चित्र पाहिल्यानंतर मुले ओळखतील की ते 'अ' ध्वनीने सुरू होते.

२. **वर्णमालेची ओळख**: शिक्षक प्रथम मुलांना 'अ' हे अक्षर कसे दिसते हे सांगतील. नंतर दिलेल्या काही शब्दांमधून 'अ' अक्षर ओळखण्यास सांगितले जाईल. मुले तीन-चार शब्दांमधून 'अ' अक्षराचा ध्वनीचा उच्चारण करतील आणि 'अ' अक्षर लिहिण्याचा सराव करतील.

३. **वाचन**: मुले चित्रे पाहतील आणि त्यांच्या भाषेत शब्द उच्चारतील. मुले त्या शब्दाच्या डावीकडून उजवीकडे बोट फिरवून 'अननस' वाचतील. अश्याच प्रकारचे अन्य शब्द वाचून मुले 'अ' अक्षर ओळखतील आणि त्याचा उच्चार करतील. शिक्षक मुलांना सांगतील की शब्दाच्या सुरुवातीला, मध्यभागी आणि शेवटी 'अ' कुठे आहे.

फळ्यावर 'अ' वाचताना शिक्षक 'अननस' या शब्दासोबत इतर तीन-चार शब्दही लिहितील. एक-एक करून मुलांसोबत चर्चा करतील. शब्द वाचण्यासाठी आणि अक्षरे ओळखण्यासाठी हे सर्व शब्द मुलांच्या विश्वातून घेतलेले आहेत. त्यामुळे पुस्तकातील चित्रे पाहून मुले हे शब्द ओळखतील आणि सहजतेने बोलू शकतील. हे वाचून मुलांना छान वाटेल. शिक्षक एक शब्द लिहितील आणि मुलांना त्यातील प्रत्येक अक्षर स्वतंत्रपणे वाचण्यास सांगतील. त्यानंतर अक्षरे जोडून शब्द वाचण्यास सांगितले जाईल. ह्यामुळे मुले अक्षरे, शब्द आणि ध्वनी देखील ओळखू शकतील. जेव्हा एखादा मुल एखादा शब्द वाचेल तेव्हा इतर मुले त्याच्यासोबत सामील होतील आणि शब्द पुन्हा उच्चारतील. याला 'सामूहिक वाचन' असे म्हणतात.

४. **लेखन**: शिक्षक प्रथम मुलांना 'अननस' शब्दाचा 'अ' लिहायला शिकवतील. डावीकडून उजवीकडे लिहिण्यासाठी पेन कसा वापरायचा हे शिक्षक दाखवतील. याला 'सहाय्यक लेखन' असे म्हणतात. त्यानंतर पुस्तकात दिलेल्या रिकाम्या जागेतील इतर अक्षरे पाहून मुले स्वतः 'अ' लिहतील. मुलांचे वाचन आणि लेखन करताना शिक्षक यामध्ये मदत करतील.

मुलांच्या मौखिक भाषेच्या विकासासाठी प्रत्येक अक्षर परिचयानंतर दोन-तीन वाक्यांची छोटी गाणी दिलेली आहेत. शिक्षक गाऊन आणि वाचून त्यासदंर्भात मुलांशी चर्चा करतील. तसेच शाळेच्या वाचनालयात उपलब्ध असलेल्या बालकथांचे पुस्तक वाचल्यानंतर त्या कथेसदंर्भात मुलांसोबत चर्चा करतील. तसेच शिक्षक इयत्ता पहिली आणि दुसरीच्या मुलांना त्यांच्या मातृभाषेतून कथा आणि गाणी सांगू शकतात. पुस्तकात दिलेले शब्द हे साक्षरतेचे उदाहरण आहेत. मुलांना शेकडो शब्द माहित असतात. त्यामुळे एक अक्षरी शब्द विचारल्यास ते अनेक शब्द सांगू शकतात. (उदाहरणार्थ, जसे शिक्षक मुलांना विचारतील की- 'अ' ने सुरु होणारे काही शब्द सांगा.)

मुलांच्या सोयीसाठी, प्रथम मराठी भाषेत उपलब्ध वर्णमालेतील गाणी/शब्द/अक्षरे देण्यात आलेली आहे. हा धडा मातृभाषेतून शिकताना मुलांना हिंदी भाषेतील ध्वनी आणि लिपी शिकता येईल.

टिपण:

मराठी भाषेतील उपलब्ध अक्षरे आणि मराठी भाषेत उपलब्ध नसलेले हिंदी अक्षरे एकत्र करून एक संपूर्ण मराठी प्रवेशिका पुस्तक सादर केले आहे. राज्यातील शाळांमध्ये वितरित करण्यात आलेली 'शिक्षक सहाय्यक पुस्तिका' वाचून तुम्ही मूलभूत साक्षरतेबद्दल अधिक जाणून घेऊ शकता.

- 'ऋ' व 'लृ' या ऱ्हस्व स्वरांचा वर्णमालेमध्ये समावेश करण्यात आलेला आहे.
- 'ॲ' आणि 'ऑ' हे अक्षर मूळ मराठीतील नसून या अक्षरांना (स्वरांना) मराठीत घेतले आहेत.
- 'अं' आणि 'अः' ही अनुक्रमे शिरोबिंदू (अनुस्वार/अनुनासिक) व विसर्ग यांची चिन्हे आहेत. त्यांचा उच्चार करताना कोणत्या तरी एका स्वराचा उच्चार प्रथम करावा लागतो. म्हणून वर्णमालेमध्ये त्यांचा स्वरादी म्हणून स्वतंत्र निर्देश करण्यात आलेला आहे.
- 'ङ', 'ञ', 'ण' आणि 'ळ' ह्या अक्षराने मराठीत कोणत्याही शब्दांची सुरूवात होत नाही.
- 'क्ष' आणि 'ज्ञ' हे देवनागरी वर्णमालेतील परंपरेने चालत आलेले लेखन चिन्हाकार आहेत. वास्तवात ती जोडाक्षरेच आहेत. म्हणून या दोन जोडाक्षरांचा वर्णमालेमध्ये 'विशेष संयुक्त व्यंजने' म्हणून निर्देश करण्यात आला आहे.

खाली दिलेल्या रेषा पहा आणि दिलेल्या जागांमध्ये गिरवण्याचा प्रयत्न करा :

उभी रेषा :

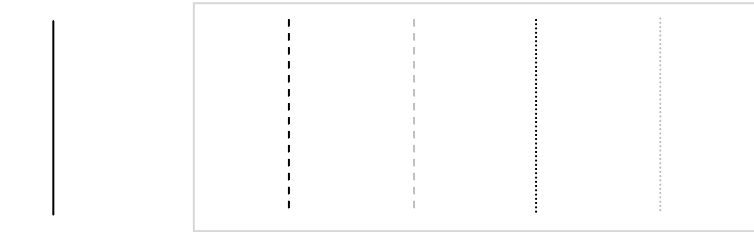

आडवी रेषा :

तिरपी रेषा १ :

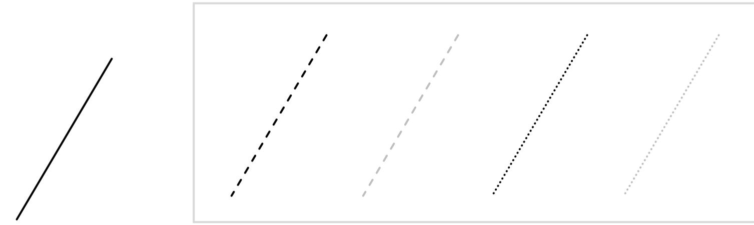

तिरपी रेषा २ :

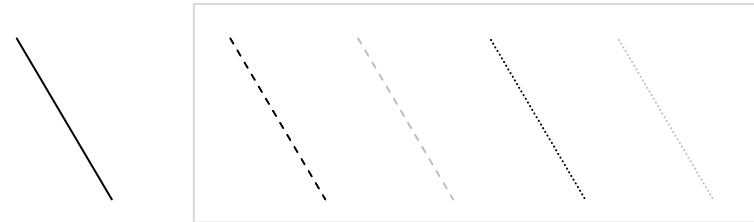

अर्ध गोल १ :

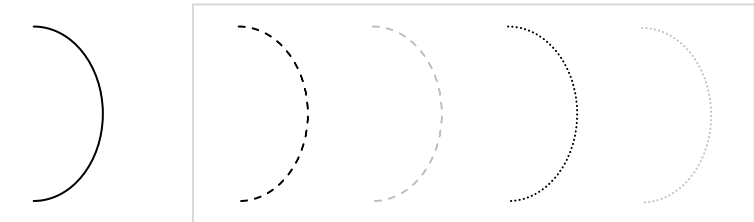

अर्ध गोल २ :

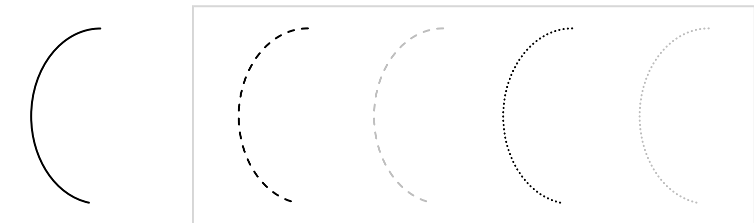

सूचना : येथे शिक्षक मुलांना सुचना करतील की पेन/पेन्सील कशी पकडायची आणि दिलेल्या रेषा गिरवायला सांगतील.

मराठी वर्ण

स्वर						
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ऌ	ए	ॲ	ऐ	ओ	ऑ	औ

स्वरादी	
अं	अः

व्यंजन				
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	ळ	

विशेष संयुक्त व्यंजन	
क्ष	ज्ञ

विशेष लेखनाकार (संयुक्त व्यंजन)	
श्र	त्र

अ

अननस

अनानास

अननस लागे आंबटगोड
आई मला दे अजून एक फोड
अननसात आहे ‘क’ जीवनसत्त्व
सर्वांना सांगा अननस खाण्याचे महत्त्व

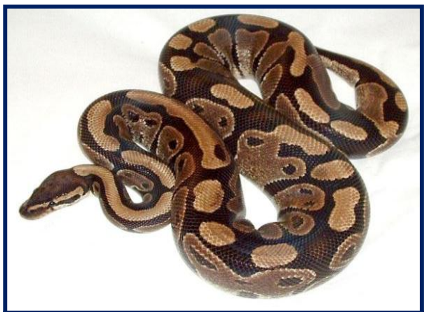

अजगर

अजगर

अनारसे

अनरसा

अळी

कीड़ा

अ अ अ

आ

आई

माँ

आई असते संस्कारांची शाळा
लावूनी लळा शिकवी बाळा
आई असते देवाचे रूप
आई मला आवडते खूप

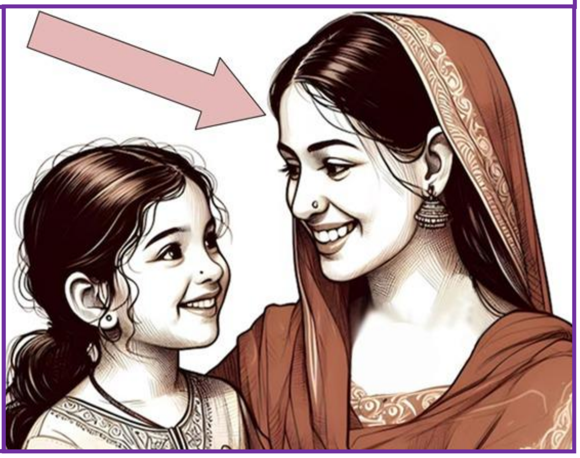

आरसा

दर्पण

आवळा

आँवला

आगगाडी

रेलगाड़ी

आ आ आ

इ

इमारत

इमारत

शहरात असतात उंच उंच इमारती
जणू त्या आकाशाशी स्पर्धा करती
मात्र कौलारू घरे मला आवडती
घरासमोरच्या बागेत फुलपाखरे बागडती

इरले

इरले

इडली

इडली

इस्त्री

इस्त्री

इ इ इ

ई

ईडलिंबू

नींबू

ईडलिंबू आहे आरोग्यास गुणकारी
आई करते त्याचे लोणचे भारी
जेवताना खातात आवडीने सारी
बोटाने चाटत मी मिटक्या मारी

जुई

जूही

पपई

पपीता

कढई

कढ़ाई

ई ई ई

उ

उखळ

ओखली

उखळ आहे आजीकडे लहान
उखळ मुसळाची मैत्री छान
उखळाविना मुसळ नाही कामाचे
उखळ मुसळाची जोडी छान

उंदीर

चूहा

उंट

ऊँट

उशी

तकिया

उ	उ	उ	

ऊ

ऊस

ईख

ऊस खात उन्हात उभे राहू
'ड' जीवनसत्त्वातून ऊर्जा घेऊ
ऊसाचा थंड रस पिऊ
चपातीसोबत काकवी खाऊ

ऊदबत्ती	पाऊस	खाऊ
अगरबत्ती	बारिश	अल्पाहार

ऊ ऊ ऊ

ऋ

ऋषी

ऋषि

ऋषी ध्यानस्थ बसले वृक्षाखाली
ऋषी एकाग्र करी ज्ञानसाधना
ऋषी चिंतती विश्वाचे कल्याण
ऋषींची हीच असे मनोकामना

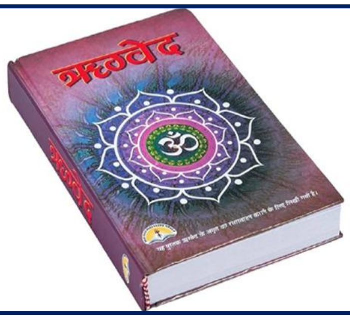

ऋग्वेद

ऋग्वेद

ऋण

ऋण

ऋतू

ऋतु

ऋ ऋ ऋ

ए

एडका

भेड़

एडका कळपातून एक हरवला
अंधार पडताच खूप घाबरला
कळपाला शोधत खूप धावला
मेंढ्या दिसताच आनंदून गेला

एकतारा

एकतारा

एरंड

एरंड

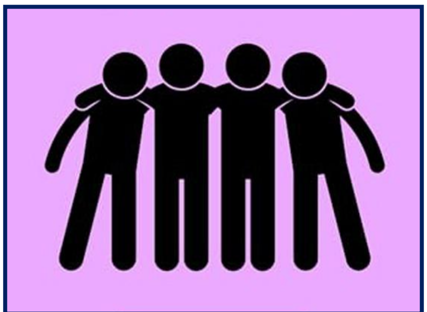

एकत्र

एकता

ए ए ए

अॅ

कॅरम

कैरम

वाढदिवसाला आईने दिली भेट भारी
बाबांनी आणले चॉकलेट खारी
कॅरम खेळायला दिला दादाने छान
कॅमेऱ्याने काढला ताईने फोटो छान

ट्रॅक्टर	कॅमेरा	बॅट
ट्रैक्टर	कैमरा	बल्ला

अॅ	अॅ	अॅ	

ऐ

ऐरावत

ऐरावत

ऐरावत हत्ती विशाल दिसे
ऐरावत ऐश्वर्याचे प्रतीक असे
ऐरावत आला समुद्र मंथनातून
ऐरावत चौदा रत्नापैकी एक असे

ऐरण

निहाई

ऐनक

ऐनक

ऐतिहासिक

ऐतिहासिक

ऐ ऐ ऐ

ओ

ओढा

नहर

ओढ्यातल्या पाण्यात बसल्या
म्हशीच्या पाठीवर शुभ्र बगळे
म्हैस पाण्यातून उठताच
भुर्रकन उडाले सगळे

ओवा

अजवाइन

ओढणी

ओढ़नी

ओठ

ओंठ

ओ ओ ओ

ऑ

डॉक्टर

चिकित्सक

डॉक्टर देतात जीवनदान
रुग्णांचे वाचवतात प्राण
नीट करतात दुर्धर आजार
मानू त्यांचे सदैव आभार

हॉटेल	मॉल	सॉस
होटल	मॉल	सॉस

ऑ ऑ ऑ

औ

औषध

दवाई

रक्षाबंधनास करी
औक्षण दादाला ताई
बहिण भावाच्या प्रेमाने
आनंदून जाई आई

औत

माची

औदुंबर

गूलर

औक्षण

आरती

औ औ औ

अं

अंगठी

अँगूठी

अंगठी एक दागिना असतो
अनामिकेत शोभून दिसतो
अंगठीतला हिरा चमचमतो
जणू शुभ्र तारा लुकलुकतो

अंडे

अंडा

अंबारी

हौदा

अंगण

आँगन

अं अं अं

अः

प्रात:काळ

प्रातः

प्रातःकाळी सूर्योदय होई
सडासंमार्जन करी आई
सुरेख रांगोळी काढी ताई
वासुदेव गाणे गात येई

अंत:करण

अंतःकरण

अः अः

ङ

अः अः अः

क

कमळ

कमल

कमळ भारताचे राष्ट्रीय फूल
कमळाची मोहकता पाडे भूल
कमळाची पाने असती गोलाकार
कमळ आवडे आम्हा सर्वांना फार

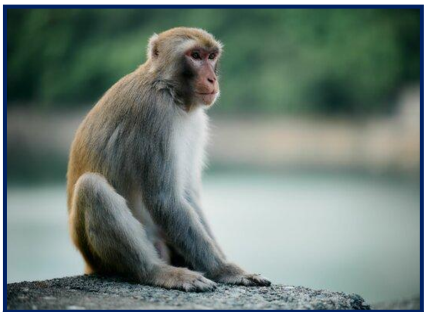

कप	माकड	बाक
कप	बंदर	बेंच

क क क

ख

खजूर

खजूर

खजूराचे फळ चविष्ट नि गुणकारी
खजूराचे फळ आवडे मुलांना भारी
खजूराचे फळ पौष्टिक नि शक्तिवर्धक
ठेवी सर्वांना निरोगी नि बळकट

खार	फुलपाखरू	पंखा
गिलहरी	तितली	पंखा

ख ख ख

ग

गवत

घास

गवत गर्द हिरवे पोपटी
वाऱ्यासंगे आनंदाने डुले
रंगीबेरंगी फुलपाखरामागे
धावती बागडणारी मुले

गुलाब

गुलाब

गोगलगाय

घोंघा

लवंग

लौंग

ग ग ग

घ

घर

घर

घरात असते सुख समाधान शांती
घरात राहती जीवलग, प्रेमाची नाती
घर नसते केवळ विटांच्या भिंती
माया आपुलकी जिव्हाळा येथे नांदती

घड्याळ	वटवाघुळ	वाघ
घड़ी	चमगादड़	बाघ

घ घ घ

ङ

वाङ्मय

साहित्य

वाङ्मय म्हणजे अर्थ शब्दांचे भांडार
वाङ्मय म्हणजे भाषाव्यापार
कथा कादंबरी कविता नाटक ललित
वैचारिक लेखन इ. असतात साहित्य प्रकार

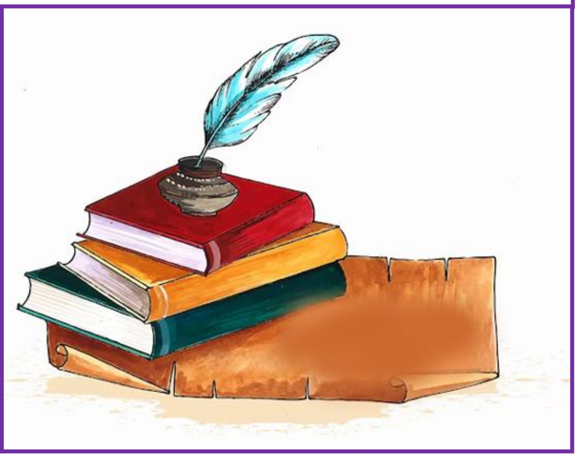

रङ्ग/रंग

रंग

ङ ङ ङ

ङ ङ ङ

च	चमचा चम्मच

चमचा सगळीकडे महत्त्वाचा
अचूक प्रमाण सांगतो चमचा
औषधांची मात्रा मोजतो चमचा
खेळ खेळतो लिंबू चमचा !

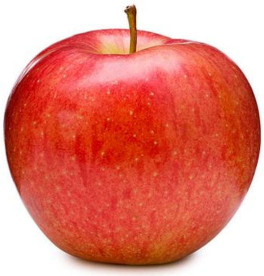

चरखा	सफरचंद	चिंच
चरखा	सेब	इमली

च	च	च	

छ

छत्री

छाता

माझ्याकडे आहे एक सुंदर छत्री
पावसाळ्यात होते तिच्याशी मैत्री
पावसात मला जपताना ती किती भिजली
प्रेम तिचे पाहून आईची माया आठवली

छडी	छपाई	छप्पर
छड़ी	छपाई	खपरैल

छ	छ	छ	

ज

जहाज

जहाज

जहाज संथ तरंगे समुद्रावर
हेलकावे घेई निळ्या लाटांवर
होकायंत्र दिशा देई जहाजाला
चला जाऊ समुद्र प्रवासाला

जग	गाजर	पखवाज
जग	गाजर	मृदंग

ज ज ज

झ

झरा

झरना

झरा झुळझुळ झुळझुळ वाही
निसर्गाच्या कुशीत धावत राही
डोंगर कड्यावरून कोसळत जाई
धुंदीत मस्त नाही कशाची घाई

झाड	झबले	झुरळ
पेड़	झबला	तिलचट्टा

झ झ झ

ञ

झाञ्ज/झांज

झाँझ

विठू माऊलीचा गजर होई
झांज वाजे कीर्तन येई रंगात
नाद सुरात दंग वारकरी होई
झांज वाजे कीर्तन येई रंगात

ञ	ञ	ञ	
ञ	ञ	ञ	
ञ	ञ	ञ	

ट

टरबूज

तरबूज

टरबूज असे गरगरीत गोलाकार
लागे गोड गोड छान पाणीदार
छोटुशा वेलीला भलेमोठे टरबूज
वाटे मला हा निसर्गाचा चमत्कार!

टपाल	चटई	खराटा
पत्र पेटिका	चटाई	झाड़ू

ट ट ट

ठ

ठसा

ठप्पा

रिमझिम पावसात भिजत
आनंदाने दुडूदुडू धावले ससे
ओल्या मऊ मातीत उमटले
त्यांच्या पायांचे सुंदर ठसे

ठुशी

हार

पठार

पठार

काठी

लाठी

ठ ठ ठ

ड

डमरू

डमरू

डमडमडम डमडम डमरू वाजवू
मिळून सारे आनंदाने मस्त नाचू
डमरूचा नाद सर्वांना खूप आवडे
नाचू लागले बेधुंद माझे सवंगडे

डफ	बेडूक	घुबड
डफली	मेढ़क	उल्लू

ड	ड	ड	

ढ

ढग

बादल

ढग काळे आकाशी दाटले गर्जती
पाखरे घरट्याकडे लगबगीने निघती
वाटे, म्हातारी आभाळात दळण दळती
गडगडाट होताच मुले खूप घाबरती

ढोल

ढोलक

गाढव

गधा

मेंढी

भेड़

ढ ढ ढ

ण

वीणा

वीणा

वीणेचा असे नाद मधुर
छेडते मीरा लागे सूर
भजनात वाजे वीणा
मंजुळ लागे नाद काना

खण

चोली कपड़ा

मेणबत्ती

मोमबत्ती

ढेकूण

खटमल

ण ण ण

त

तलाव

तालाब

तलावात उमलली कमळ फुले
पाहण्यास ती धावत येती मुले
तलावाच्या पाण्यात सोडले दिवे
दूर दूर तरंगत राहती ते लाटांसवे

तबला

तबला

सुतारपक्षी

कठफोड़वा

परात

परात

त त त

थ

थवा

पक्षियों का झुंड

अंगणात उतरला पोपटाचा थवा
लाल लाल चोंच रंग किती हिरवा
बाळाने टाकला मुठीतला सुकामेवा
मेजवानी पाहता हळूच आला पारवा

थाळी	कथक	मेथी
थाली	कथक	मेथी

थ थ थ

द

दगड

पत्थर

दगडावर शिल्पकाराची नजर पडली
शिल्पकाराने दगडातून मूर्ती कोरली
दगडाला शिल्पकाराने बनवले देव
तू तुझ्या जीवनाचा शिल्पकार लक्षात ठेव!

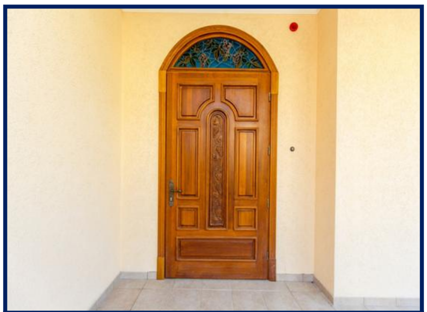

दरवाजा

दरवाजा

मोदक

मोदक

नदी

नदी

द द द

ध

धनुष्य

धनुष

अवघड कार्याला म्हणती 'शिवधनुष्य'
मात्र आम्हांला आवडे सप्तरंगी इंद्रधनुष्य!

धरण

बाँध

धबधबा

जलप्रपात

मध

शहद

ध ध ध

न

नळ

नल

नळातून मिळे आम्हाला पाणी
वाहते नळ बंद करावे सर्वांनी
नळ गळका दुरूस्त करावा
पाण्याचा अपव्यय टाळावा

नथ

नथ

सनई

शहनाई

विमान

हवाई जहाज

न न न

प

पतंग

पतंग

पतंग उडतो निळ्या आकाशी
दोरी त्याची असे माझ्यापाशी
उंच उंच घेई मस्त भरारी
पतंग माझा दिसे सर्वात भारी

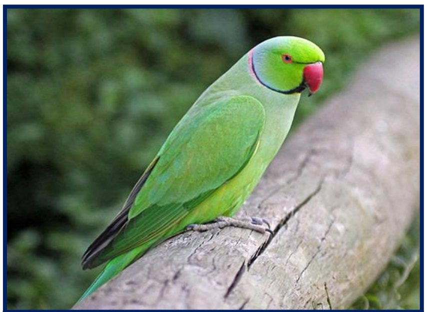

पणती	पोपट	टोपी
दिया	तोता	टोपी

प प प

फ

फणस

कटहल

फणस दिसते वरुन काटेरी
फणसाचे गरे खातात सारी
फणसाचा जॅम बनतो भारी
फणस आहे फळ गुणकारी

फळ	सूर्यफूल	जिराफ
फल	सूरजमुखी	जिराफ

फ	फ	फ	

ब

बदक

बत्तख

बदक शुभ्र पांढरा तलावात पोहतो
रिमझिम पावसात मस्त बागडतो
वीज चमकताच पटकन घाबरतो
पाण्यातून बाहेर येत दुडूदुडू धावतो

बगळा

बगुला

बिबटा

तेंदुआ

डाळिंब

अनार

ब ब ब

भ

भवन

भवन

किती किती सुंदर हे प्रशस्त भवन
आजूबाजूला हवे गर्द हिरवे वन
लहानांना आवडे चॉकलेटचे भवन
मोठ्यांना आवडे टोलेजंग भवन

	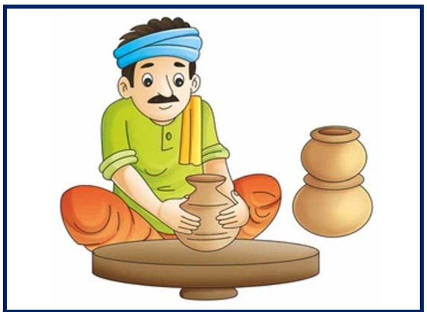	
भास्कर	कुंभार	नभ
सूरज	कुम्हार	आसमान

भ भ भ

म

मगर

मगरमच्छ

मगर हळूच पाण्यात लपते
मासा दिसताच झडप घालते
मास्यांना वाटते मगरीची भीती
मगर पाहून सर्वजण घाबरती

मका	चिमणी	बदाम
भुट्टा	गौरैया	बादाम

म म म

य

यज्ञ

यज्ञ

यज्ञ धगधगावा समतेचा
हवन करू त्यात भेदाचा
यज्ञ धगधगावा कष्टाचा
हवन करू त्यात आळसाचा

यान

अंतरिक्ष यान

योग

योग

गाय

गाय

य य य

र

रथ

रथ

रथातून उतरली सुंदर सिंड्रेला
सिंड्रेलाच्या रथाला शुभ्र घोडे
पायात तिच्या चमचमती जोडे
कोण ही? सर्वांना पडले कोडे!

रवी

मथानी

पारवा

कबूतर

मोर

मोर

र र र

ल

लसूण

लहसुन

लसूण आरोग्यास गुणकारी फार
लसणाने भाजी लागते चवदार
कांद्याच्या जोडीला असे लसूण
आजी सोलते कोपऱ्यात बसून

लाकूड

लकड़ी

पालक

पालक

बैल

बैल

ल ल ल

व

वड

बरगद

वडाचे झाड असते मोठे डेरेदार
वडाच्या पारंब्या लोंबती फार
वडाच्या झाडाला बांधला झोका
खेळायला सर्वांना मारा हाका

		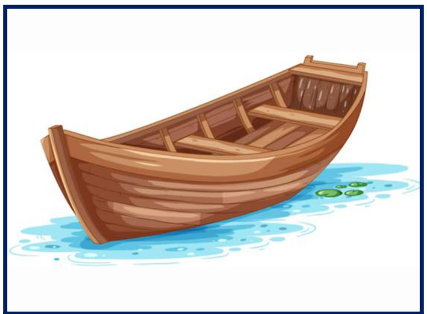
वन	कावळा	नाव
वन	कौआ	नाव

व	व	व	

# श	शहामृग शुतुरमुर्ग

जगातील सर्वात मोठ्या
आकाराचा पक्षी म्हणून
शहामृगास आहे मान
लांब मजबूत पायामुळे
शहामृग धावतो छान

शंख	बडीशेप	शेळी
शंख	सौंफ	बकरी

श	श	श	

ष

षटकोन

षट्कोण

षटकोनास असतात बाजू सहा
षटकोनाची व्याख्या भूमितीत पहा
षटकार असतो क्रिकेटचा फटका
फलंदाजास मिळतात धावा सहा

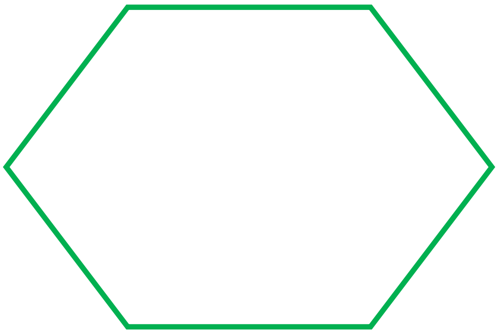

पुष्पगुच्छ	भाषण	पुरुष
गुलदस्ता	भाषण	पुरुष

ष	ष	ष	

स

ससा

खरगोश

सशाचा असतो पांढरा रंग
मऊमऊ कापसासारखे अंग
गाजर खाण्यात असतो दंग
आवाजाने तंद्री होते भंग

सरबत

शरबत

बासरी

बाँसुरी

मासा

मछली

स स स

ह

हत्ती

हाथी

हत्तीचे मोठे सुपासारखे कान
सोंड जणू जिराफाची मान
हत्तीला घाबरती प्राणी लहान
सोंडेने सलामी देतो छान

हरीण

हिरण

बाहुली

गुड़िया

सिंह

शेर

ह ह ह

ळ

बाळ

शिशु

बाळ दिसते गोड रूप सावळे
लुकलुकत पाहते उघडून डोळे
सावरीत तोल तुरुतुरु चाले
टाळ्या वाजवत हळूच डोले

जांभूळ

जामुन

हळद

हल्दी

नारळ

नारियल

ळ ळ ळ

क्ष

क्षत्रिय

क्षत्रिय

क्षत्रिय असतो पराक्रमी
युद्धावर जाई विजयी होई
रक्षण करण्यास कामी येई
सर्वजण त्यास मान देई

शिक्षिका

शिक्षिका

नक्षत्र

तारा

पक्षी

पंछी

क्ष क्ष क्ष

ज्ञ

ज्ञानेश्वर

ज्ञानेश्वर

ज्ञानेश्वर माऊली महान
गीतेचे भाषांतर केले छान
लिहून ‘भावार्थ दीपिका’
मराठीची उंचावली पताका

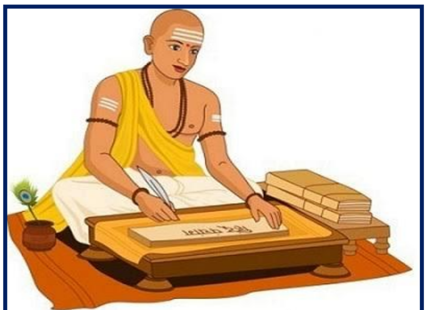

ज्ञानी	विज्ञान	वैज्ञानिक
ज्ञानी	विज्ञान	वैज्ञानिक

ज्ञ	ज्ञ	ज्ञ	

श्र

श्रमिक

श्रमिक

श्रम करूनी जीवन जगू
श्रमाचे मोल सर्वांना सांगू
श्रमाचे फळ असते गोड
श्रम कर आळस सोड

श्रीखंड

श्रीखंड

आश्रम

आश्रम

अश्रू

आँसू

श्र श्र श्र

त्र

त्रिकोण

त्रिकोण

त्रिकोणास असती बाजू तीन
त्रिकोण आहे काढायला सोपा
त्रिकोण पाहता आठवे समोसा
समोसा आवडीने खातो गपागपा

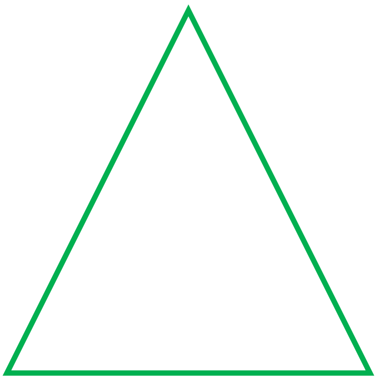

कुत्रा

कुत्ता

तमालपत्र

तेजपत्ता

संत्री

संतरा

त्र त्र त्र

स्वर	मात्रा	उदाहरण	चित्र
अ	◌	पदक	
आ	◌ा	आंबा	
इ	ि◌	गिधाड	
ई	◌ी	तीळ	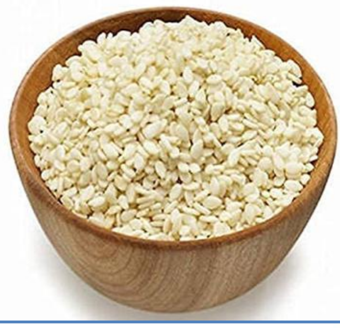
उ	◌ु	पुस्तक	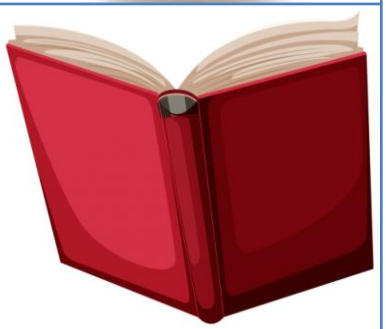

स्वर	मात्रा	उदाहरण	चित्र
ऊ	◌ू	गूळ	
ऋ	◌ृ	कृषी	
ए	◌े	पेरू	
ॲ	◌ॅ	जॅम	
ऐ	◌ै	कैरी	

स्वर	मात्रा	उहाहरण	चित्र
ओ	◌ो	घोडा	
ऑ	◌ॉ	गॉगल	
औ	◌ौ	चौरंग	
अं	◌ं	कंगवा	
अः	◌ः	नमः	

चला, आपण मराठीत पुढील संख्या मोजूया			
१	एक		1
२	दोन		2
३	तीन		3
४	चार		4
५	पाच		5
६	सहा		6
७	सात		7
८	आठ		8
९	नऊ		9
१०	दहा		10

११	अकरा		11
१२	बारा		12
१३	तेरा		13
१४	चौदा		14
१५	पंधरा		15
१६	सोळा		16
१७	सतरा		17
१८	अठरा		18
१९	एकोणीस		19
२०	वीस		20

चला, आपण मराठीत पुढील संख्या लिहूया

१	१	१	१	
२	२	२	२	
३	३	३	३	
४	४	४	४	
५	५	५	५	
६	६	६	६	
७	७	७	७	
८	८	८	८	
९	९	९	९	
१०	१०	१०	१०	

११	११	११	११	
१२	१२	१२	१२	
१३	१३	१३	१३	
१४	१४	१४	१४	
१५	१५	१५	१५	
१६	१६	१६	१६	
१७	१७	१७	१७	
१८	१८	१८	१८	
१९	१९	१९	१९	
२०	२०	२०	२०	

हिंदी वर्ण

स्वर

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ
ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह		
क्ष	त्र	ज्ञ		
श्र	ड़	ढ़		

ePathshala

Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

DIKSHA

Download **DIKSHA** app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using **DIKSHA**

1. Select preferred language
2. Choose your role: Student or Teacher
3. Grant access and allow app permissions
4. Tap to scan the QR code
5. Focus camera on the QR code in textbook
6. Click to Play QR code specific e-resource(s)

For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
1	ANAL	12	HALABI (HALBI)	23	KONDA	34	MANIPURI	45	SANTALI (WEST BENGAL)
2	ANGAMI	13	HMAR	24	KORKU	35	MAO	46	SAVARA (SORA)
3	AO	14	JATAPU (KUVI)	25	KOYA	36	MISHMI	47	SHERPA
4	ASSAMESE	15	JUANG	26	KUI	37	MISING	48	SÜMI (SEMA)
5	BHUTIA	16	KABUI (RONGMEI)	27	KUKI	38	MIZO	49	TAMANG
6	BODO	17	KARBI	28	KURUKH/ORAON	39	MOGH	50	TANGKHUL
7	DEORI	18	KHANDESHI	29	KUWI	40	MUNDARI	51	TANGSA
8	DESIA	19	KHARIA	30	KUZHALE (KHEZHA)	41	NEPALI	52	TIWA (LALUNG)
9	DIMASA	20	KINNAURI	31	LIANGMAI	42	NYISHI (NISSI)	53	TULU
10	GADABA (GUTOB)	21	KISAN (KUNHU)	32	LIMBU	43	RAI	54	WANCHO
11	GARO	22	KODAVA (COORGI/KODAGU)	33	LOTHA	44	SANTALI (ODISHA)		

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
55	ADI	60	HO	65	KOM	70	MARAM	75	RENGMA
56	BHUMIJ	61	KHIAMNIUNGAN	66	KONYAK	71	NOCTE	76	SHINA
57	CHANG	62	KOCH	67	LADAKHI	72	PASHTO	77	TAMIL
58	GONDI	63	KODA (KORA)	68	LEPCHA	73	POCHURY	78	TIBETAN
59	HALAM	64	KOLAMI	69	MARA (LAKHER)	74	RABHA	79	YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE)

PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
80	BENGALI	85	GUJARATI	90	KORWA	95	MARATHI	100	ODIA
81	BHILI	86	KANDHA (KONDH)	91	LAHAULI	96	MARING	101	PARJI (DURUA)
82	BISHNUPRIYA MANIPURI	87	KANNADA	92	MAITHILI	97	MONPA	102	PHOM
83	CAR NICOBARESE (PŪ)	88	KHASI	93	MALAYALAM	98	MUNDA	103	PUNJABI
84	DOGRI	89	KONKANI	94	MALTO	99	NANCOWRY (MÖÜT)	104	TELUGU

PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language	SN	Language
105	BALTI	109	HINDI	113	PAITE	117	SINDHI	121	ZEME (ZEMI)
106	CHOKRI	110	KASHMIRI	114	SANGTAM	118	THADOU-KUKI	122	ZOU
107	GANGTE	111	KOKBOROK (TRIPURI)	115	SANSKRIT	119	URDU		
108	GONDI-TELUGU	112	LAI (PAWI)	116	SANTALI (JHARKHAND)	120	VAIPHEI		

भारतीय भाषा संस्थान
Central Institute of Indian Languages
(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)
Manasagangotri, Mysuru - 570 006
0821 2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
National Council of Educational Research and Training
Sri Aurobindo Marg
New Delhi - 110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in